بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 26.09.25

हुनैन नामक युद्ध के परिवेश में
नबी करीम ﷺ के पवित्र जीवन परिचय का बयान।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (तबूक तिथि 26,1404 हश)26 .09. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बे में हुनैन के युद्ध से प्राप्त माले ग़नीमत के बांटे जाने का वर्णन हो रहा था, इसके अन्दर अभी और विवरण भी है। जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि आँहज़रत ﷺ ने जब माले ग़नीमत लोगों को दिए तथा मुजाहिदों को उनके हिस्से भी प्रदान कर दिए, परन्तु जो ख़ुम्स (माले ग़नीमत का पांचवां भाग) वह लगभग पूरा का पूरा आप स. ने क़ुरैश के सरदारों तथा अन्य अरब मुख्याओं के दिलों में इस्लाम के प्रति लगाओ पैदा करने के लिए उनमें बाँट दिया, किसी को सौ ऊँट दिए और किसी को पचास ऊँट। सरदारों को इतना अधिक धन सम्पत्ति दिए जाने पर अंसार के कुछ युवाओं ने अनुभव किया एवं ऐसा समझा कि जैसे अपनी सेवाएं तथा रसूलुल्लाह स. से प्यार होने के कारण वे दूसरे लोगों की तुलना में अधिक अधिकार रखते हैं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि कभी अचेतन अवस्था में की गई बात भी बड़े दूर के परिणाम रखती है। निश्चित ही रूलुल्लाह स. के धन बांटने पर अंसार नौजवानों ने अप्रसन्नता प्रकट की थी, किन्तु सब ने नहीं की थी। परन्तु ख़ुदा एवं ख़ुदा के रसूल स. को यह ऐसी नाराज़ करने वाली बात थी कि अंसार को रहती दुनिया तक इसका परिणाम झेलना पड़ा है। अतएव इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि रसूले करीम ﷺ ने जब मक्का पर विजय प्राप्त की तो मक्के के लोग आप स. के पास आए

जिनकी दृष्टि ईमान में पूर्ण रूप से पारंगत न होने के कारण अभी दुनिया ही की ओर झुकी हुई थीं। इसके बाद की एक जंग में कुछ धन सम्पत्ति मुसलामानों के हाथ लगे थे। आँहज़रत ﷺ ने वह माल उन लोगों को दे दिया। एक अन्सारी नौजवान ने किसी सभा में कहा कि हमारी तलवारों से ख़ून टपक रहा है और रसूले करीम ﷺ ने माल अपने घर वालों के दे दिए हैं।

आप स. को इसका पता चला तो प्रतिष्ठित सहाबियों को बुलाया और पूछा कि मुझे ऐसी बात पहुँची है। अंसार रो पड़े और कहा कि किसी मूढ़ ने कहा होगा। आप स. ने फ़रमाया कि नहीं, ऐ अंसार! तुम कह सकते हो कि हमने मुहम्मद (ﷺ) को उस समय शरण दी जब उसे कोई शरण देने वाला नहीं था और उसके नगर वासियों ने उसे निकाल दिया था। फिर उसके लिए सम्मान एवं विजय प्राप्त हुई तो उसने धन सम्पत्ति अपने रिश्तेदारों में बाँट दिए। इस पर अन्सार की चींखें निकल गईं और उन्होंने फिर कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! हम ऐसा नहीं कहते। फिर आप स. ने फ़रमाया कि तुम इसी बात को एक अन्य शैली में भी कह सकते हो, और वह इस प्रकार है कि जिस व्यक्ति को ख़ुदा ने पूरे जगत की हिदायत के लिए नियुक्त किया, वह मक्के की चीज़ थी, किन्तु ख़ुदा उसे मदीने में ले गया और फिर ख़ुदा ने अपने ज़ोर एवं शक्ति से मक्के को उसके आधीन किया। उस समय मक्के वालों ने समझा कि उनकी चीज़ उन्हें मिल जाएगी। परन्तु मक्के वाले भेड़ एवं बकरियों को ले गए और मदीने वाले ख़ुदा के रसूल स. को लेकर अपने नगर की ओर चले गए। फिर आप स. ने फ़रमाया कि यह बात निःसंदेह एक नादान के मुंह से निकली है, किन्तु इसके कारण अब तुम्हें दुनिया का शासन नहीं मिल सकता, अब तुम्हारी सेवाओं का बदला तुम्हें हौज़े कौसर पर ही मिलेगा। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि देख लो! इतिहास गवाह है कि तेरह शताब्दियाँ बीत चुकी हैं और चौधवीं जा रही है (बल्कि अब तो वह भी बीत चुकी है) इस अवधि में हर क़ौम ही इस्लाम के कारण बादशाह बनी, किन्तु कोई अंसार बादशाह नहीं हो सका। अतः कभी कभी एक व्यक्ति का कथन पूरी क़ौम के लिए हानि कारक हो सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने यह घटना अपने एक ख़ुत्बे में बयान की तथा इसे बयान करके जमात को नसीहत फ़रमाई, वह आज भी हमारे लिए उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण है जैसी उस समय थी। आप रज़ी. ने फ़रमाया कि वे लोग जो बलिदान इस लिए देते हैं कि उन्हें कोई पद मिले अथवा धन सम्पत्ति मिले, वे कदाचित मेरे बुलाने पर (अर्थात, ख़लीफ़-ए-वक्त के बुलाने पर) क़ुरबानी के लिए न आएं, बल्कि वही लोग आएं जो ख़ुदा के लिए क़ुरबानी करते हैं। क्यूंकि मैं तो स्वंय दुर्बल तथा बीमार इंसान हूँ, मैं किसी के उपकार का बोझ नहीं उठा सकता, अतः मैं अपने लिए नहीं मांगता, जो ख़ुदा के लिए देता है, वह दे, और ख़ुदा तआला ही उसका बदला भी देगा, ख़ुदा तआला पर भरोसा रखना चाहिए, यदि वह चाहे तो इसी दुनिया में दे दे और यदि वह चाहे तो आख़िरत में दे। अतएव जो श्रद्धा से बलिदान देता है उसका बलिदान व्यर्थ नहीं जाता, मोमिन के बलिदान को कोई नहीं मिटा सकता। अतः क़ुरबानी करने वाले वही लोग हैं जो ख़ुदा को सम्मुख रखते हैं, न कि दुनिया को। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि एक आयु को पहुँच कर जमाअत के लोगों में भी ऐसी भावना उत्पन्न हो जाती है कि हमारा इतना अनुभव है, हमने इतना काम किया है, हमें इसका बदला मिलना चाहिए, जो नहीं दिया जाता। वे सोचें कि क्या केवल सांसारिक पुरस्कार लेना है अथवा अल्लाह तआला के पुरस्कारों का अधिकारी बनना है? अन्सारुल्लाह का इज्तिमा भी आज से हो रहा है, इस

हवाले से क्यूंकि इस आयु में ऐसा विचार आता है, जब अनुभव प्राप्त हो जाता है। अन्सार को भी मैं यह कहता हूँ कि यदि किसी के दिल में अपने अनुभव तथा सेवा के संदर्भ में कोई भावना पैदा होती है तो उसे झटक दे और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के चेष्टा करे। इस अवसर पर ग्रामीण निवासियों का धैर्य खो देने की भी घटना मिलती है। माले ग़नीमत के दिए जाने के अवसर पर कुछ बद्दु लोग भी आप स. के आस पास एकत्र हो गए और धन मांगने लगे। आप स. ने बद्दुओं के इस दुस्साहस पर उन्हें कुछ नहीं कहा, न ही नाराज़ हुए, बल्कि मुस्कुराते हुए सुन्दर रंग में उनकी तरबियत फ़रमाई और उन्हें धन भी प्रदान किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि इन युद्धों से निपटने के बाद वे माल जो पराजित शत्रुओं के जुर्मानों तथा युद्ध स्थल पर छोड़ी हुई चीज़ों से जमा हुए थे, नियमानुसार रसूलुल्लाह स. को इस्लामी सेना में बाँटने थे, किन्तु उस अवसर पर आप स. ने बजाए इन मालों को मुसलामानों में बांटने के, मक्के तथा आस पास के लोगों में बाँट दिए। इन लोगों के अन्दर भी अभी ईमान तो पैदा नहीं हुआ था, इनमें से अनेक तो अभी काफ़िर ही थे, और जो मुसलमान थे, वे भी नए नए मुसलमान हुए थे। यह उनके लिए बिलकुल नई चीज़ थी कि एक क़ौम अपना माल दूसरे लोगों में बाँट रही है। कुछ लोगों में नेकी एवं तक़वा पैदा होने के बजाए उनके दिलों में धन की लालसा और अधिक हो गई। उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के चारों ओर घेरा डाल लिया तथा और अधिक लालच के साथ आप स. को तंग करना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि धकेलते हुए आप स. को एक पेड़ तक ले गए और एक व्यक्ति ने तो आप स. की चादर, जो आप स. के कन्धों और गर्दन में पड़ी हुई थी, पकड़ कर इस प्रकार मरोड़नी शुरू कर दी कि आप स. का सांस रुकने लगा। आप स. ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! यदि मेरे पास कुछ और होता तो मैं वह भी तुम्हें दे देता, तुम मुझे कभी कंजूस अथवा कायर नहीं पाओगे।

फिर आप स. अपनी ऊंटनी के पास गए और उसका एक बाल तोड़ा और उसे ऊंचा किया और फ़रमाया कि ऐ लोगो! मुझे तुम्हारे मालों में से इस बाल के बराबर भी आवश्यकता नहीं, सिवाए उस पांचवें भाग के जो अरब की प्रथा के अनुसार शासन का भाग होता है, और वह पांचवां भाग भी मैं अपने व्यक्तिगत उपयोग में नहीं लाता, बल्कि वह भी तुम्हीं लोगों के कामों पर खर्च किया जाता है, और याद रखो कि ख़यानत करने वाला इंसान क़यामत के दिन ख़ुदा के समक्ष इस ख़यानत के कारण अपमानित होगा। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि लोग कहते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ बादशाहत के इच्छुक थे, क्या बादशाहों एवं जनता का ऐसा ही सम्बन्ध हुआ करता है, क्या किसी में शक्ति होती है कि बादशाह को इस प्रकार धकेलता हुआ ले जाए और उसके गले में पटका डाल कर उसका गला घोंटे? अल्लाह के रसूलों के अतिरिक्त यह नमूना कौन दिखा सकता है, किन्तु बावजूद इस तरह पूरा माल निर्धनों में बांटने के फिर भी ऐसे कठोर हृदय लोग मौजूद थे जो रसूलुल्लाह ﷺ के आवंटन को न्याय संगत नहीं समझते थे।

हदीस में रिवायत मिलती है कि माले ग़नीमत के आवंटन के समय एक बद्दु भी रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में उपस्थित हुआ और कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आपने जो कुछ मुझसे वादा किया था, उसे पूरा करें। रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि ख़ुश हो जाओ! वह बद्दु कहने लगा कि आप स. ने कई बार यही कहा है कि ख़ुश हो जाओ। अर्थात आप स. ने दिया कुछ नहीं, बस कहते रहे हैं। रसूलुल्लाह स. को उसकी यह प्रतिक्रिया बड़ी बुरी लगी। आप स. ने उसके ओर से अपना पवित्र मुख फेर लिया। वहाँ अबू मूसा

अशअरी रज़ी. एवं हज़रत बिलाल रज़ी. खड़े थे, उनकी ओर अपना चेहरा करते हुए फ़रमाया कि इसने तो ख़ुश ख़बरी स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है, अब तुम क़ुबूल कर लो। दोनों ने यह सुना तो तुरन्त बोल पड़े- या रसूलुल्लाह ﷺ! हमने क़ुबूल की। इसके बाद आप स. ने पानी का प्याला मंगवाया और उसमें अपना हाथ और मुंह धोया। फिर आप स. ने वह बचा हुआ पानी हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ी. और हज़रत बिलाल रज़ी. को देते हुए फ़रमाया कि तुम दोनों इस पानी को पी लो तथा अपने चेहरे और छाती पर भी डाल लो, और ख़ुश हो जाओ। अतः उन्होंने प्याला लेकर ऐसा ही किया। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ पवित्र पत्नियों की निष्ठा और आँहज़रत ﷺ के पवित्र अस्तित्व से बरकत प्राप्ति में जिज्ञासा का भी एक दिव्य एवं अदभुत दृश्य नज़र आता है। लिखा है कि निकट ही एक तम्बू में उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. भी थीं। उन्होंने पर्दे के पीछे से कहा कि अपनी माँ के लिए भी पानी बचाना। अतः उन्होंने हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. के लिए भी कुछ पानी प्याले में छोड़ दिया।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों का सदवर्णन फ़रमाया- 1- मुकर्रम फहीमुद्दीन नासिर साहब, मुबल्लिग़ सिलसिला रोमानिया। इनके ख़ानदान में अह्मदिय्यत का आगमन इनके दादा हज़रत मिर्ज़ा इल्मे दीन साहब के माध्यम से हुआ। मरहूम ने जून 1996 में जामिया पास किया और फिर इन्होने तफ़सीर क़ुरआन में भी विशेषज्ञ किया। 2006 में इनको रोमानिया भिजवाया गया और मृत्यु तक वहीं सेवा करते रहे। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ये पराए देश में दीन के लिए क़ुरबान हुए, इस दृष्टि से इनका स्तर शहीद का स्तर ही है, अन्तिम सांस तक अपनी वफ़ा के संकल्प को निभाया और ख़ूब निभाया। फ़रमाया- निःसंदेह फ़हीम नासिर मरहूम की भूमिका एवं नमूना विशेष रूप से वाक़फ़ीने ज़िन्दगी के लिए एक सबक़ है। 2- मुकर्रम अब्दुल अलीम फ़ारूकी साहब सुपुत्र मुकर्रम अब्दुल रशीद फ़ारूकी साहब आफ़ केनेडा, जिनकी इनके अपने ही घर में सशस्त्र डाकुओं ने गोली मार कर जान ले ली। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिउन। आप हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के सहाबी हज़रत मौलवी क़ुदरतुल्लाह साहब सनोरी रज़ी. और हज़रत मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब रज़ी. के पड़नवासे थे।

हुज़ूरे अनवर ने इन मृतकों की मगफिरत एवं दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब अदा करने का एलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब